# अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : छठी – जैन धर्म विशारद (परीक्षा 12 जुलाई, 2015)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

**रोल नं.:** (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

**परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :**

**केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर**

**परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–**

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

**जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–**

| प्रश्न क्र. | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | कुल योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्राप्तांक | | | | | | | | | |
| पूर्णांक | 10 | 10 | 10 | 10 | 24 | 12 | 12 | 12 | 100 |
| पुनः जाँच | | | | | | | | | |

**जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर**

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) अर्जुन माली ने कितने मास तक बेले बेले की तपस्या कर सिद्धि प्राप्त की

(क) आठ मास (ख) छह मास

(ग) नौ मास (घ) चार मास ( )

(b) साधु की वृत्ति होती है -

(क) मधुकर के समान (ख) फूल के समान

(ग) कपूर के समान (घ) गंधक के समान ( )

(c) निहुओ ' का अर्थ है -

(क)चंचल मन से (ख) एकाग्र मन से

(ग) संयम से (घ) अनेकाग्र मन से ( )

(d) कामभोग सुख देते हैं -

(क) अनन्त काल तक (ख) चिरकाल तक

(ग) क्षणमात्र के लिए (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

(e) तेऊकाय के जीव आयुष्य पूर्ण कर किस गति में उत्पन्न होते हैं -

(क) नरक गति (ख) तिर्यंचगति

(ग) मनुष्य गति (घ) देवगति ( )

(f) नपुंसक वेद की आगति होती है -

(क) 285 की (ख) 371 की

(ग) 563 की (घ) 179 की ( )

(g) 'खेचर' कौन-सी नरक तक उत्पन्न होते हैं -

(क) दूसरी नरक तक (ख) तीसरी नरक तक

(ग) चौथी नरक तक (घ) पाँचवीं नरक तक ( )

(h) 'चामर' कौन-सा प्रतिहार्य है ?

(क) दूसरा (ख) चौथा

(ग) तीसरा (घ) पाँचवां ( )

(i) रात्रिभोजन कारण है,

(क) संवर का (ख) आश्रव का

(ग) निर्जरा का (घ) कर्म बंध का ( )

(j) जीव के भारी होने का कारण है : -

(क) 18 पापों के त्याग से (ख) 18 पापों के सेवन से

(ग) आसाता वेदनीय से (घ) साता वेदनीय से ( )

**प्र.2** निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) पौषध व्रत आत्म-मल की विशुद्धि करता है। ( )

(b) दूसरे देवलोक की आगति 46 की है। ( )

(c) युगलिक मनुष्य आयुष्य पूर्ण कर देवगति में उत्पन्न होते हैं। ( )

(d) कामभोग अनर्थों की खान है। ( )

(e) अगन्धन कुल का अर्थ त्यागे हुए विष को वापिस चूस लेना है। ( )

(f) आदिनाथ का केवल ज्ञान विष्णु महादेव आदि देवों में पाया जाता है। ( )

(g) देवदुन्दुभि चौथा प्रतिहार्य है। ( )

(h) आहार को पचाने में सूर्य की किरणें सहायक होती हैं। ( )

(i) मेघ का गर्जन होने पर दो प्रहर का अस्वाध्याय होता है। ( )

(j) पूरा सूर्यग्रहण होने पर सोलह प्रहर का अस्वाध्याय होता है। ( )

**प्र.3** मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मैं कान्त प्रिय रुचिकर भोग प्राप्त होने पर स्वेच्छा से छोड़ देता हूँ .....

(b) मैंने रथनेमि को उपदेश देकर संयम में स्थिर किया। .....

(c) मेरे अतिरिक्त सभी राजकुल व श्रेष्ठी कुल से दीक्षित हुए हैं। .....

(d) मैं ऐसी राशि हूँ जिसके सभी भव्य जीव अवश्य मोक्ष में जाते हैं। .....

(e) मुझसे निकला हुआ जीव आगामी एक भव में सम्यक्त्व प्राप्त नहीं कर सकता है। .....

(f) मेरी गति 517 की है। .....

(g) मेरे समान पुत्र अन्य माताएँ उत्पन्न नहीं कर सकती। .....

(h) मैं दूसरे प्रतिहार्य के रूप में जाना जाता है। .....

(i) मेरे त्याग से जैन धर्मावलम्बी होने की पहचान होती है। .....

(j) मुझसे एक प्रहर का अस्वाध्याय होता है। .....

**प्र.4** उत्तर व प्रश्न दोनों क्रम से नहीं दिए गए हैं आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए : - **10x1 = (10)**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| (a) | अच्छंदा | - | समुद्रविजय | ..... |
| (b) | अन्धगवण्हिणो | - | तीसरा | ..... |
| (c) | रत्नावली तप | - | असमर्थता | ..... |
| (d) | आकाश की श्रेणी | - | संसार समुद्र | ..... |
| (e) | भवोदधि | - | तीसरी नरक | ..... |
| (f) | खेचर | - | अनादि अनन्त | ..... |
| (g) | त्रिभुवनार्तिहराय | - | मोक्ष का मार्ग | ..... |
| (h) | शिवपदस्य | - | तीनों लोकों की पीड़ा हरने वाले | ..... |
| (i) | गर्जित | - | अप्कायरूप | ..... |
| (j) | मिहिका | - | अस्वाध्यायकाल | ..... |

**प्र.5 निम्न पंक्तियों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए** **12x2 = (24)**

1. **तीर्थंकर की गति लिखिए।**

.....

.....

2. **त्यागी किसे कहा गया है ?**

.....

.....

3. **किस कारण से जीव संसार बढ़ाता है ?**

.....

.....

4. **56 अन्तर्द्वीप के युगलिक आयुष्य पूर्णकर कहाँ तक उत्पन्न होते हैं ?**

.....

.....

5. **किसने साधना व तपस्या तथा शास्त्र पढ़े बिना केवल शुक्ल ध्यान के बल पर सिद्धि प्राप्त की ?**

.....

.....

6. **रजोद्घात किसे कहते हैं?**

.....

.....

7. **'जलचर' कौन-सी नारकी तक उत्पन्न हो सकते हैं?**

.....

.....

8. श्रोत्रेन्द्रिय के वश में हुआ जीव कौन-सा कर्म बार-बार बांधता है?

.....

.....

9. पहली से पाँचवीं नरक तक के जीव आयुष्य पूर्ण कर अगले भव में क्या बनते हैं?

.....

.....

10. सद्वृत्ति से मन में .....

..... नहीं कुछ अर्जिता।

11. श्री रत्नाकर गुणगान .....

..... मंगलमय जग को करे।।

12. स्त्रीणां शतानि .....

..... स्फुरदंशुजालम्।।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए (4x3=(12)

(a) लघुसिंह निष्क्रीडित तप का स्वरूप लिखिए :-

.....

.....

.....

(b) रत्नाकर पच्चीसी के माध्यम से बताइए कि संसार ठगने के लिए, जग को रिझाने के लिए, झगड़ा मचाने के लिए मेरे द्वारा क्या-क्या किया गया?

.....

.....

.....

(c) मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।

किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि।।

उक्त श्लोक का भावार्थ लिखिए

.....

.....

.....

(d) रात्रि भोजन आश्रव का कारण है? स्पष्ट कीजिए

.....

.....

.....

.....

7. निम्न गाथाओं के अर्थ लिखिए - **(4x3=(12)**

(a) जरा जाव न पीलेइ, वाही जाव न वड्ढइ।

जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे।।

.....

.....

.....

(b) खणमेत्तसुक्खा बहुकालदुक्खा, पगाम दुक्खा अणिगामसोक्खा।

संसार मोक्खस्स विपक्खभूया, खाणी अणत्थाण उ कामभोगा।।

.....

.....

.....

(c) जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं।

न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं।।

.....

.....

.....

(d) सिंहासने मणिमयूख शिखाविचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।

बिम्बं वियद्विलसदंशुलता- वितानं, तुंगोदयाद्रि-शिरसीव सहस्ररश्मेः,

उक्त श्लोक का भावार्थ लिखिए

.....

.....

.....

.....

प्र.8- निम्न गाथाओं को पूर्ण करके अर्थ लिखिए - (4x3=(12)

(a) कोहो पीइं .....

.....

.....

..... लोहो सव्व विणासणो।

(b) सुवण्ण रूप्पस .....

.....

.....

..... आगास समा अणंतिया।।

(c) क्रोधाग्नि में मैं .....

.....

.....

..... मायाजाल में मैं व्यस्त हूँ।

**(d) समाइ पेहाइ .....**

**.....**

**.....**

**..... विणएज्ज रागं।।**